चरित्र निर्माण एवम् व्यक्तित्व विकास के पुरोधा : स्वामी विवेकानन्द

डॉ. सुप्रिया चौधरी

शोध सारांश

विश्ववरेण्य वीर सन्यासी स्वामी विवेकानन्द को युवाओं को चारित्रिक उन्नयन एवं राष्ट्र निर्माण का पुरोधा कहा गया है। इस महापुरूष ने एक रूढिवादी समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन कर उसे नवीन दिशा प्रदान करने का महत्वाकांक्षी कार्य किया। उन्होनें कहा कि युवा ही देश की बहुमूल्य सम्पत्ति होते है। वे अनन्त ऊर्जा के स्रोत होते हैं। आवश्यकता सिर्फ उन्हें जगाने व सही दिशा प्रदान कर, श्रेष्ठ–मूल्यों का सवंर्धन कर, उन्नत व त्यागमय मार्ग अपनाने की सलाह देने की है। उन्होंने भारत के ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण विश्व के युवाओं को अपनी सुक्षुप्त अवस्था का त्याग कर, सामर्थ्य को पहचानने और राष्ट्रोत्थान का मार्ग अपनाने का आह्वान किया। शिक्षा का स्वरूप व महत्व बतलाया। सत्संस्कारों को अपनाने पर बल दिया। चारित्रिक विकास में धर्म की महत्ता प्रतिपादित की, ताकि मनुष्य पशुता को त्याग कर क्रमशः इन्सानियत व देवत्व को अपनाकर पुरूषार्थ को प्राप्त कर सके। मन पर शासन कर उसे आत्म केन्द्रित करने की महत्त्व पर प्रकाश डाला। संयम का महत्व समझाया और कर्तव्य पालन पर बल दिया, ताकि एक आदर्श और सुन्दर समाज की रचना की जा सके। स्वामी विवेकानन्द ने चरित्र–निर्माण में निःस्वार्थ भाव से कार्य करने की महत्ता पर बल दिया। मनुष्य की स्वयं की इच्छाशक्ति, शिक्षा एवं धर्म सभी चरित्र–निर्माण के सोपान हैं। विवेकानन्दजी ने संदेह, ईर्ष्या एवं द्वेष आदि को त्याग कर सन्मार्ग को अपनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हमारी वर्तमान अवस्था के लिये हम स्वयं ही जिम्मेदार है, जो हमारे पूर्व कर्मों का फल है। अतः कर्मसुधार कर हम, जो चाहे प्राप्त कर सकते है। उसके लिये हमारा एक ध्येय होना चाहिये। ध्येयहीन जीवन व्यर्थ है। परन्तु ध्यये के पीछे शुभ उद्देश्य हो। युवाओं का आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्मत्याग और आत्मसंयम ही एक सुन्दर भविष्य का पुर्ननिर्माण कर सकते हैं।

संकेताक्षरः चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास, नैतिक शिक्षा, राष्ट्र उत्थान

''निर्माणों के पावनयुग में, हम चरित्र निर्माण ना भूलें,
स्वार्थ साधना की आँधी में, वसुधा का कल्याण ना भूलें।''

उपर्युक्त पक्तियाँ किसी राष्ट्र के सांस्कृतिक उत्थान के लिये राष्ट्र के निवासियों के चरित्र निर्माण की महत्ता को परिलक्षित करती हैं। राष्ट्र, समाज व परिवार के वास्तविक उत्थान का आधार उस राष्ट्र के युवाओं का चरित्र और व्यक्तित्व होता है। यह पंक्तियाँ एक ऐसी युवा शक्ति का आह्वान करती है, जो निज स्वार्थों से ऊपर उठ कर परिवार, समाज और अपनी मातृभूमि के कल्याण के लिए प्रेरित रहे।

आत्मोन्नति के लिए भी उत्कृष्ट चरित्र पहली आवश्यकता है।

स्मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राधीय
आयुः प्रतरं दद्यानाः।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन,
शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः।।[1]

(ऋग्वेद 10/17/2)

अर्थात् :– जो लोग दुराचार को मिटाकर सदाचार पर स्थिर रहते हैं, वे उत्तम जीवन और दीर्घ आयु प्राप्त करते हैं। धन और संतानयुक्त होकर शारीरिक और मानसिक पवित्रता प्राप्त करते हैं।

अँग्रेजी के कैम्ब्रिज अन्तर्राष्ट्रीय शब्दकोष के अनुसार 'आप जिस प्रकार के व्यक्ति हैं, वहीं आपका व्यक्तित्व है और वह आपके आचरण, संवेदनशीलता तथा विचारों से व्यक्त होता है।' लांगमैन के शब्दकोष के अनुसार किसी व्यक्ति का पूरा स्वभाव तथा चरित्र ही व्यक्तित्व कहलाता है।

इसी प्रकार व्यक्ति की पहचान उसके विचारों से होती है, विचारों के अनुरूप उसका चरित्र बनता है। चरित्र मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ निधि मानी गई है। चरित्र रक्षा का महत्व जीवन रक्षा से भी अधिक महत्वपूर्ण है। उत्तम चरित्र का मनुष्य जीवन लक्ष्य प्राप्त कर संसार में यशस्वी बनता है। इतिहास में वर्णित श्रेष्ठ पुरूषों के चरित्रों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति की उन्नति के लिए कुछ आधारभूत गुण अत्यावश्यक हैं। गीता में इन गुणों की महिमा का अनेक स्थानों पर वर्णन हैं। ''दैवी संपदा'' के उपनामों वाले ये गुण हैः– सदाचरण(ऋग्वेद 10/71/5), सत्य(ऋग्वेद 1/41/4), परोपकार (ऋग्वेद 1/147/3), ईर्ष्या, द्वेष भाव न रखना, आस्तिकता, वैचारिक शुद्धता, सतकर्म, धर्माचरण, दान, श्रद्धा, यज्ञ, तप, दया, अहिंसा, त्याग, मृदुता, तेजस्विता आदि।

आत्मिक उन्नति व राष्ट्र उन्नति के लिए प्राचीन काल से वेदों, उपनिषदों एवं गीता आदि ग्रन्थों में श्रेष्ठ चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व के विकास पर बल दिया जाता रहा है। इसी संदर्भ में विश्ववरेण्य, वीर सन्यासी, स्वामी विवेकानन्द को आधुनिक भारत के चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास के पुरोधा के रूप में जाना जाता है। इस महापुरूष ने रूढ़िवादी समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन करके समाज को नवीन दिशा प्रदान की। भारतीय सभ्यता संस्कृति के महान् प्रहरी और वेदान्त के गूढ़ ज्ञाता ने, जहाँ एक ओर तत्कालीन भारत की आर्थिक दुर्दशा, उसकी सामाजिक अवनति तथा मानसिक अस्थिरता का ज्ञान कराया, तो दूसरी ओर भारतीयों को भारत की सांस्कृतिक सम्पन्नता, पुरातन परम्पराओं की शक्ति, ग्राह्य शक्ति तथा प्रच्छन्न आत्मिक शक्ति का बोध भी कराया। स्वामी जी ने अध्यात्म, वैश्विक मूल्यों, धर्म, चरित्र निर्माण, शिक्षा एवम् समाज को बहुत विस्तृत एवं गहरे आयामों से विश्लेषित किया है। भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के युवाओं के लिए उनके विचार प्रासंगिक एवं अनुकरणीय हैं।

स्वामी जी ने शिक्षा को समाज की रीढ़ माना है।[2] उनके अनुसार शिक्षा मनुष्यता की सम्पूर्णता का प्रदर्शन है। सभी प्रशिक्षणों का अंतिम ध्येय मनुष्य का विकास करना हैं। शिक्षा यांत्रिकी, लौकिक, तात्विक, भौतिक, औद्योगिक अथवा आध्यात्मिक किसी भी क्षेत्र में क्यों न हो, इसी अन्तिम ध्येय को प्राप्त कराती है। अतः इसका आधार चरित्र गठन आधेय होना चाहिये।[3] स्वामी जी ने कहा है, जो शिक्षा मनुष्य में आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास न जगाए, उस शिक्षा का कोई औचित्य नहीं है। शिक्षा से व्यक्तित्व का निर्माण, जीवन जीने की दिशा एवं चरित्र निर्माण होना चाहिए। जन साधारण की शिक्षा और उन्नति पर ही किसी भी देश का भाग्य निर्भर करता है। स्वामीजी ने कहा था – ''याद रखो, प्रत्येक देश में ये ही राष्ट्र के मेरूदण्ड हैं।'' उन्होंने कहा कि वास्तव में कभी किसी व्यक्ति ने किसी दूसरे को नहीं सिखाया। हम में से प्रत्येक को अपने आपको सिखाना होगा। स्वयं को ऊँचा उठाना होगा। स्वयं में आत्मविश्वास एवं आत्मश्रद्धा जाग्रत करनी होगी। ''बस अन्दर सोता हुआ ब्रह्मभाव जाग उठा मानो स्वयं प्रकृति ने कह दिया, 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'– उठो, जागो और ध्येय की प्राप्ति तक रूको मत।'' स्वामी जी का कहना था कि शिक्षा भावात्मक होनी चाहिए, निषेधात्मक नहीं। भावात्मक विचार सत्संस्कारों के नियंत्रक है व जीवन–निर्माण, मनुष्य निर्माण तथा चरित्र निर्माण के सहायक है। मनुष्य का चरित्र उसकी विभिन्न प्रवृत्तियों की समष्टि है, उसके मन के समस्त झुकावों का योग। अतः सत्संस्कारों को गढ़ना है। सभी खराब आदते अच्छी आदतों द्वारा वशीभूत की जा सकती हैं। इसीलिए उन्होंने कहा कि अपने चरित्र का निर्माण करो और अपने प्रकृत स्वरूप को, ज्योतिर्मय नित्य–शुद्व स्वरूप को प्रकाशित करो।

धर्म को शिक्षा का आधार बताते हुए स्वामी जी ने कहा कि धर्म हमेशा मनुष्य को सद्विचार एवं आत्मा से जोड़ता है।[4] धर्म वह विचार एवं आचरण है जो मनुष्य के अन्दर की पशुता को इन्सानियत में और इंसानियत को देवत्व में बदलने का सामर्थ्य रखता है।[5] उन्होने सभी धर्मों का सार सत्य को बताया है[6] एवं उसके आचरण की प्रेरणा दी है। स्वामी जी ने कहा – ''धर्म तो शिक्षा का मेरूदण्ड ही है'' वे समस्त जातियों को, सभी मतों को भिन्न–भिन्न सम्प्रदाय के दुर्बल, दुःखी, पद्दलित लोगों को उच्च स्तर में पुकार कर स्वयं अपने पैरो पर खड़े होने और मुक्त हो जाने के लिये कहते हैं। केवल बौद्धिक शिक्षा स्वार्थी बनाती है, स्वार्थ दुर्बलता की जड़ है और दुर्बलता ही सारे दुष्कर्मों की प्रेरक शक्ति है। अतः अन्तः प्रेरणा जाग्रत करने की आवश्यकता है। गीता में कहा गया है।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव हयात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।।
(गीता 605)[7]

आपको ही अपना उद्धार करना होगा। सब कोई अपने आपको उबारें। सभी विषयों में स्वाधीनता, यानी मुक्ति की ओर अग्रसर होना ही पुरूषार्थ है। जिससे और लोग दैहिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वाधीनता की ओर अग्रसर हो सकें, उसमें सहायता देना और स्वयं भी उसी तरफ बढ़ना ही परम पुरूषार्थ है। यही उपनिषदों का मूल मंत्र भी है।[8]

स्वामी विवेकानन्द का कहना है कि व्यक्ति का मन अच्छी आदतें डालने और बुरी आदतें छोड़ने, एकाग्रता के साथ कुछ करने का संकल्प लेता है, परन्तु बहुधा यहीं मन विद्रोह कर बैठता है और हम इन संकल्पों को रूपायित करने के हमारे प्रयास से पीछे हटने को मजबूर हो जाते हैं। विवेकानन्द जी के अनुसार ''हम एक क्षण तो स्वयं, अपने मन पर शासन नहीं कर सकते! यही नहीं, किसी विषय पर उसे स्थिर नहीं कर सकते और अन्य सबसे हटाकर किसी एक बिन्दु पर उसे केन्द्रित नहीं कर सकते! फिर भी हम अपने को स्वतंत्र कहते है। जरा इस बात पर गौर तो करो।''[9]

भगवद् गीता का भी कहना है कि असंयमित मन एक शत्रु के समान और संयमित मन हमारे मित्र के समान आचरण करता है।[10] अतः हमें अपने मन की प्रक्रिया के विषय में एक स्पष्ट धारणा रखने की आवश्यकता है। क्या, हम इसे आज्ञापालन में अपने साथ सहयोग करने में प्रशिक्षित कर सकते हैं? यह किस प्रकार हमारे व्यक्तित्व के विकास में योगदान कर सकता है?

स्वामी जी ने श्रेष्ठ चरित्र व व्यक्तित्व के निर्माण के लिए कर्म पर भी विशेष बल दिया। कर्तव्य पालन चरित्र निर्माण की पूंजी है। चरित्र निर्माण की निरन्तर प्रक्रिया में सम्मिलित है, व्यक्ति द्वारा किये गये कर्मों का योग। मन का संकल्प और शरीर का पराक्रम लगाकर कर्तव्य पालन करके सफलता प्राप्त की जा सकती है। यदि सभी नागरिक अपने कर्त्तव्यों का पालन अपने पद एवं गरिमा के अनुसार व्यवहार करते हुए करेंगे और श्रेष्ठ जन का अनुसरण उसे आदर्श मानकर अन्य लोग भी करेंगे तो निःसन्देह हम एक आदर्श एवं सुन्दर समाज का निर्माण कर पायेंगे। विवेकानन्द जी ने कहा कि मानव जाति का चरम लक्ष्य ज्ञान लाभ है, परन्तु मानव सुख को चरम लाभ मान लेता है, जो उसकी भारी भूल है। संसार में सभी दुखों का मूल यही है, जबकि सुख और दुःख दोनों ही महान शिक्षक है। यही सुख–दुःख जब आत्मा पर से होकर जाते है, तो आत्मा पर अनेक चित्र अंकित हो जाते हैं। और इन चित्रों अथवा संस्कारों की समष्टि के फल को ही हम मानव का चरित्र कहते हैं।[11] चरित्र गठन में सुख और दुःख दोनो ही समान रूप से उत्तरदायी हैं। कभी–कभी तो दुःख सुख से भी बड़ा शिक्षक हो जाता है। यदि हम शान्त होकर स्वयं का अध्ययन करें तो प्रतीत होगा कि हमारा हँसना–रोना, सुख–दुःख, हर्ष–विषाद, हमारी शुभकामनाएँ एवं शाप, स्तुति और निंदा ये सब हमारे मन के ऊपर बर्हिजगत के अनेक घात–प्रतिघात के फलस्वरूप उत्पन्न हुए हैं और हमारा वर्तमान चरित्र इसी का फल है।[12] कर्मों की शाक्ति सबसे प्रबल है, जो मनुष्य के चरित्र गठन पर प्रभाव डालती है। संसार में हम जो सभी कार्य–कलाप देखते है, मानव समाज में जो भी घटित हो रहा है, वह सारा केवल मन का ही खेल है। मनुष्य की इच्छाशक्ति ही है। मनुष्य की यह इच्छाशक्ति चरित्र से उत्पन्न होती है और वह चरित्र कर्मो से गठित होता है। अतएव कर्म जैसा होगा, इच्छाशक्ति का विकास भी वैसा ही होगा। अतः निःस्वार्थ भाव से निरन्तर कर्म करते रहना चाहिये।

स्वामी विवेकानन्द जी ने युवाओं को चरित्र निर्माण की ओर प्रेरित करते हुए कहा है कि प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही दैवीय गुणों से परिपूर्ण होता है। ये गुण सत्य, निष्ठा, समर्पण, साहस एवं विश्वास से जागृत होते हैं। इनको अपने आचरण में लाने से व्यक्ति महान् एवम् चरित्रवान बन सकता है। मनुष्य को महान बनने के लिए संदेह, ईर्ष्या, द्वेष को छोड़ना होगा।[13] जो सन्मार्ग पर चलने में और सत्कर्म करने में संलग्न हो, उनकी सहायता करनी होगी।

विवेकानन्द जी के अनुसार युवा किसी भी देश की सबसे बहुमूल्य सम्पत्ति होता है। उन्होंने युवाओ को अनन्त ऊर्जा का स्रोत बताया है। उन्होंने कहा है कि अगर युवाओं की उन्नत ऊर्जा को सही दिशा प्रदान कर दी जाये तो राष्ट्र के विकास को नये आयाम मिल सकते हैं। उन्होंने कहा कि अपनी वर्तमान अवस्था के लिए हम ही जिम्मेदार है और जो कुछ हम होना चाहें, उसकी शक्ति भी हमीं में है। यदि हमारी वर्तमान अवस्था हमारे ही पूर्व कर्मों का फल है, तो यह निश्चित है कि जो कुछ हम भविष्य में होना चाहते है, वह हमारे वर्तमान कार्यों द्वारा ही निर्धारित किया जा सकता है।[14] स्वामी जी कहते थे ''जिसके जीवन में ध्येय

नहीं है, जिसके जीवन में कोई लक्ष्य नहीं है, उसका जीवन व्यर्थ है।'' लेकिन हमें एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे लक्ष्य एवं कार्यों के पीछे शुभ उद्देश्य होना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द ने युवावर्ग के चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास में 5 सूत्र दिये है –आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्मज्ञान, आत्मसंयम और आत्मत्याग। उपर्युक्त पाँच तत्वों के अनुशीलन से व्यक्ति स्वयं के चरित्र या व्यक्तित्व तथा देश और समाज का पुनर्निर्माण कर सकता है। जिसने निश्चय कर लिया, उसके लिए सिर्फ करना शेष रह जाता है।

वर्तमान पीढ़ी परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। जीवनशैली, नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों में बदलाव आ रहा है। आज की युवा पीढ़ी विकास एवं आर्थिक उन्नयन के बोझ तले इतनी अधिक दब गयी है कि वह अपने पारम्परिक आधारभूत उच्च आदर्शो से समझौता तक करने में हिचक नहीं रही है। आज की युवा पीढ़ी के पास उत्तराधिकारी के रूप में स्वामी विवेकानन्द के विचारों की धरोहर है, जिसके अनुपालन से वह भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में सफलता के नये आयाम स्थापित कर सकते है। जैसा कि स्वामी जी ने आह्वान किया था।

''उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत''

व्याख्याता, इतिहास विभाग

एस.एस.जैन सुबोध पी.जी. कॉलेज, जयपुर।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, आचार्य पं0 श्रीराम, वेदो का दिव्य संदेश, पृ0 170
2. अपूर्वानंद, स्वामी, स्वामी विवेकानन्दः संक्षिप्त जीवनी तथा उपदेश (अष्टम संस्करण), पृ0 84, रामकृष्ण मठ, नागपुर।
3. सक्सैना, डॉ. ओंकार, श्रीरामकृष्ण विवेकानन्द प्रसंग, पाँचवा संस्करण, पृ0 91, रामकृष्ण मिशन, जयपुर।
4. भिडे, सुश्री निवेदिता, भारत जागो! विश्व जगाओ!!, पृ0 20, स्वामी विवेकानन्द, सार्धशती समिति, नई दिल्ली।
5. अपूर्वानंद, स्वामी, स्वामी विवेकानन्दः संक्षिप्त जीवनी तथा उपदेश, (अष्टम संस्करण), पृ0 79, रामकृष्ण मठ, नागपुर।
6. ब्रह्मस्थानंद, स्वामी, ज्ञानयोग, स्वामी विवेकानन्द, पृ0 6, रामकृष्ण मठ, धन्तोली, नागपुर।
7. विवेकानन्द, स्वामी, व्यक्तित्व का विकास, रामकृष्ण मठ, नागपुर।
8. ब्वउचसमजम ूवतो वि्ँउप अपअमांदंदकए टवसण् प्प्ए च्हण 238
9. विवेकानन्द साहित्य, खण्ड 4, पृ0 113
10. गीता 6/5–6
11. विवेकानन्द स्वामी, कर्मयोग, पृ0 1, अठ्ठारवां संस्करण, रामकृष्ण मठ, नागपुर।
12. विवेकानन्द स्वामी, कर्मयोग, पृ0 3, अठ्ठारवां संस्करण, रामकृष्ण मठ, नागपुर।
13. अपूर्वानंद, स्वामी, स्वामी विवेकानन्दः संक्षिप्त जीवनी तथा उपदेश, (अष्टम संस्करण), पृ0 84, रामकृष्ण मठ, नागपुर।
14. विवेकानन्द स्वामी, कर्मयोग, पृ0 6 (अठ्ठारवां संस्करण) रामकृष्ण मठ, नागपुर।